आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 15/03/2026; Revised: 18/03/2026; Accepted: 24/03/2026; Published: 28/03/2026

फीजी की हिंदी कविता में पर्यावरण परिदृश्य : प्रवासी चेतना और प्रकृति-संबंध

[1]Dr. Subashni Kumar

Assistant Professor

Dept. of Language and Literature

Fiji National University- Fiji

Email- subashni.kumar@fnu.ac.fj

[2]Mrs. Sarita Chand

Lecturer

Dept. of Primary Education

Fiji National University- Fiji

Email- sarita.chand@fnu.ac.fj

[1]Dr. Subashni Kumar, [2]Mrs. Sarita Chand, **फीजी की हिंदी कविता में पर्यावरण परिदृश्य : प्रवासी चेतना और प्रकृति-संबंध,** आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 1/मार्च 2026**,(18 -25)

https://doi.org/10.5281/zenodo.19487138

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

अनुरूपी लेखक : [1] **Dr. Subashni Kumar,** Assistant Professor, Dept. of Language and Literature, Fiji National University- Fiji

सह लेखक [2]Mrs. Sarita Chand, Lecturer, Dept. of Primary Education, Fiji National University- Fiji

सारांश

यह शोध पत्र फीजी की हिंदी कविता में निहित पर्यावरण परिदृश्य और प्रवासी चेतना के अंतर्संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। फीजी की हिंदी कविता ने प्रवासी भारतीयों की सांस्कृतिक और सामाजिक संवेदनाओं के साथ-साथ उनके प्राकृतिक परिवेश को भी प्रभावी रूप से अभिव्यक्त किया है। इस अध्ययन का उद्देश्य फीजी की हिंदी कविताओं में पर्यावरणीय परिदृश्य, प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक परिवेश के साहित्यिक स्वरूप का विश्लेषण करना है। शोध परिणाम यह दर्शाते हैं कि ये कविताएँ केवल प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों के प्रति जागरूकता तथा मनुष्य और प्रकृति के सह-अस्तित्व की भावना को भी प्रोत्साहित करती हैं।

मुख्य शब्दावली

फीजी, प्रवासी भारतीय, प्रकृति, पर्यावरण दृष्टि, परिदृश्य, प्रवासी साहित्य

फीजी में हिंदी कविता मुख्यतः प्रवासी भारतीयों और उनके वंशजों द्वारा विकसित की गई है। इन कविताओं में समुद्र, नदियाँ, खेत, हरे-भरे जंगल, पर्वत और स्थानीय प्राकृतिक परिवेश न केवल दृश्यों के रूप में प्रस्तुत होते हैं, बल्कि वे कवि के भाव, सामाजिक संवेदनाएँ और जीवन-संघर्ष का भी प्रतिबिंब बनकर उभरते हैं। इस शोध का उद्देश्य फीजी के प्राकृतिक परिवेश और हिंदी कविता के आपसी संबंधों का अध्ययन करना है। अधिकांशतः फीजी में हिंदी कविता पर होने वाले शोधों में सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर ध्यान दिया गया है, जबकि पर्यावरण परिदृश्य का व्यापक अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। यह शोध पत्र कविताओं में प्रकृति के चित्रण, पर्यावरणीय चेतना, और सांस्कृतिक संदर्भ को उजागर करता है।

फीजी में हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास लगभग 147 वर्ष पुराना है। इसका आरंभ सन् 1879 ई. में भारतीयों के आगमन के साथ हुआ, जब शर्तबंधी (गिरमिट) प्रथा के अंतर्गत भारतीय मजदूरों का प्रथम दल फीजी पहुँचा। भारत के बिहार, उत्तर प्रदेश तथा दक्षिण भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आए इन मजदूरों के साथ हिंदी भाषा, लोक-संस्कृति, भक्ति परंपरा और साहित्यिक चेतना भी फीजी की भूमि पर आई।

इन प्रवासी भारतीयों की पोटलियों में बँधी तुलसीदास की रामचरितमानस, सूर के पद, कबीर के भजन, मीरा के गीत, आल्हा की वीरगाथाएँ, किस्सा तोता-मैना जैसी रचनाएँ केवल ग्रंथ नहीं थीं, बल्कि उनकी स्मृति, संस्कार और सांस्कृतिक पहचान का आधार थीं। रामायण, महाभारत, आल्हा आदि की कथाएँ उनके जातीय संस्कारों में पहले से ही रची-बसी थीं। यही सांस्कृतिक पूँजी फीजी में हिंदी साहित्य और काव्य की आधारभूमि बनी। गिरमिट काल में भारतीय मजदूर दिनभर कोलम्बरों और सरदोरों के

अत्याचार, कोड़ों और अपमानजनक व्यवहार के बीच कठोर श्रम करते थे। रात में वे कुली लेनों में एकत्र होकर रामायण की चौपाइयाँ, कबीर के दोहों के सहारे अपने दुख, पीड़ा और अपमान को सहने का मानसिक बल अर्जित करते थे। यही सामूहिक वाणी फीजी के हिंदी काव्य की पहली आधारशिला बनी।

गिरमिट प्रथा की समाप्ति (1920) के बाद जब प्रवासी भारतीय फीजी में स्थायी रूप से बसने लगे, तब भूमि, खेती और प्रकृति उनके जीवन का केंद्र बन गई। गन्ने के खेत, नदियाँ, वर्षा, समुद्री जलवायु और उष्णकटिबंधीय प्रकृति ने उनके जीवन को आकार दिया। यहीं से फीजी का हिंदी काव्य एक नए रूप में विकसित हुआ जो केवल प्रवास का साहित्य नहीं रहा, बल्कि मानव–प्रकृति का साहित्य बन गया।

प्रकृति उनके लिए कोई बाहरी पृष्ठभूमि नहीं थी, बल्कि जीवन की एक सच्ची साथी थी, जो हर कदम पर उनके साथ चलती थी। कवि जोगिंद्र सिंह कंवल धरती को माता कहते हैं। उनके लिए धरती केवल ज़मीन नहीं, बल्कि जीवन देने वाली माँ है। वे धरती को सम्मान, प्रेम और श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। उनकी कविताओं में धरती एक जीवित सत्ता के रूप में दिखाई देती है, जो मनुष्य को पालती है, सहारा देती है और जीवन जीने की शक्ति देती है। प्रवासी चेतना में धरती "माँ" बन जीवनदायिनी शक्ति बनी। यह दृष्टि भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की प्रकृति चेतना से जुड़ी हुई थी।

भारतीयों के लिए जमीन उनकी माँ है जो उन्हें अपनी गोद में रहने का स्थान, खाने के लिए अहार और पीने के लिए स्वच्छ जल प्रदान करती है। भारतीय कठिन परिश्रम से जमीन पर खेती कर अन्न उगाते हैं, लेकिन जमीन की लीस समाप्त होने पर वहाँ के जमीन मालिक इन गरीब किसानों को जमीन से निकाल देते हैं तो वे निराशा के सागर में डूब जाते हैं। इन संवेदनाओं को कवि 'उजड़ते-उखड़ते लोग' कविता में अभिव्यक्त करते हैं-

जिसे वे धरती माँ कहते थे

जिसकी फसलों की छाव में

कई पीढ़ियों से रहते थे

आज उसकी दिल चीरती जुदाई

कितनी दुखदाई हो रही है...

अपने बेटों से बिछड़कर

आज पराई हो रही है।" (कंवल, 2001, पृ. 53)

एक ओर कवि अपनी कविताओं में जमीन और प्रकृति के प्रति गहरी भावुकता व्यक्त करते हैं, तो वहीं दूसरी ओर वे लोगों को अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने और संघर्ष करने की प्रेरणा भी प्रदान करते हैं।

सन् 1926 में फीजी से 28 विद्यार्थियों का पहला दल भारत अध्ययन हेतु पहुँचा। इसी दल में पं. कमला प्रसाद मिश्र गुरुकुल, वृन्दावन पहुँचे। उन्होंने ग्यारह वर्षों तक अध्ययन कर 'आयुर्वेद शिरोमणि' की उपाधि प्राप्त की और फीजी लौटे। उनकी कविताएँ सरस्वती, माधुरी, विशाल भारत जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। डॉ. विवेकानन्द शर्मा उन्हें फीजी का राष्ट्रकवि मानते हैं और उनकी कविताओं को 'फीजी के राष्ट्रीय कवि – कमला प्रसाद मिश्र का काव्य' नामक ग्रंथ में संकलित किया गया। इसके बाद 'फीजी में हिंदी: स्वरूप और विकास (2000)' तथा 'फीजी का हिंदी काव्य साहित्य (2004)' जैसी कृतियों के माध्यम से फीजी के हिंदी काव्य को संगठित साहित्यिक पहचान मिली।

प्रकृति हमेशा से मनुष्य की साथी रही है, जिसने उसके जीवन, संवेदनाओं और संघर्ष में निरंतर साथ निभाया है। मनुष्य ने पृथ्वी पर जन्म लेकर सर्वप्रथम प्रकृति की गोद में खेला है। उसके विविध परिवर्तनों का अनुभव किया है। साहित्य में भी प्रकृति के परिवर्तन के प्रति एक अद्भूत आकर्षण एवं अलौकिक अपनत्व का भाव व्यंजित है। फीजी के कवियों ने भी अपने काव्य में प्रकृति के विविध रूपों को चित्रित किया है, जैसे आलंबन रूप, प्राकृतिक सौंदर्य, उद्दीपन रूप, संवेदनात्मक रूप, विनाशकारी रूप, लोक शिक्षा रूप आदि।

पं. कमलाप्रसाद मिश्र के काव्य में प्रकृति के वैविध्यमय मनोरम रूप का चित्रण अंकित है। वे प्रकृति के एकांत प्रेमी रहे हैं। मिश्र जी की 'मेघ', 'झरना', 'वसन्तोद्गार', 'रेवा नदी के प्रति', 'यहाँ पहले सवेरा होता है', आदि कविताओं में फीजी के प्राकृतिक सौंदर्य का मनोहर चित्रण हुआ है। फीजी के सुन्दर और मनोरम समुद्री तट, सदाबहार मौसम, खेतों की हरयाली, नदियाँ और पर्वत, यह सब उनकी कविताओं में शब्द-बद्ध हैं। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-

रेवा में जीवन का उल्लास छुपा है मृदु प्रकृति परी का अनुपम हास छिपा है
किस तरह जान पाएंगे रेवा वासी इन लहरों में क्या-क्या इतिहास छिपा है (मिश्र, 1999, पृ.45)

यहाँ सूरज पहले निकलता है और दूर अंधेरा होता है। फीजी फिरदौस है पसिफिक का यहाँ पहले सवेरा होता है। हर ओर गजब हरियाली है हर ओर छटा मतवाली है, यह फीजी वही जिसमें हर माह बहार का फेरा होता है। ((मिश्र, 1999, पृ.44)

दक्षिण प्रशान्त महासागर का स्वर्ग कहलाने वाला फीजी द्वीप में अक्सर बाढ़, आँधी-तूफान, सूखा, सूनामी, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप के कारण मानव, पशु-पक्षियों, जीन-जन्तुओं को कई मुसीबतों

का सामना करना पड़ता है। कवि मिश्र की 'तूफान आया' कविता में प्रकृति के विनाशकारी रूप को दर्शाया गया है। फीजी में आए समुद्री तूफान का चित्रण कवि ने इस प्रकार किया है-

तूफान रहा है गरज आज है महानाश का आज राज
है पवन गा रहा महाराग प्रलयंकार पंचम रक्त फाग
तरू गिर-गिरकर दे रहे ताल चला रहा नृत्य तांडव विशाल (मिश्र, 1999, पृ. 42)

कवि नरेश चंद की कविता 'तूफान' में भारी बारिश, बिजली, गर्जन करते बादल, ऊँची-ऊँची लहरें और तूफानी हवाओं का धरती पर प्रहार बहुत ही सजीव रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह कविता न केवल प्रकृति की विनाशकारी शक्ति को दर्शाती है, बल्कि पाठक को उसके प्रभाव का अनुभव भी कराती है। तूफान के इस प्रकोप ने फीजी के लोगों के जीवन में भय और त्राहि-त्राहि की स्थिति उत्पन्न कर दी, और इस प्रकार यह कविता मानव जीवन और प्राकृतिक आपदाओं के बीच के घनिष्ठ संबंध को उजागर करती है। 'तूफान' कविता की पंक्तियों में प्रकृति के विनाशकारी रूप का चित्रण इस प्रकार व्यंजित है-

तभी दामिनी ने प्रथम प्रहार धरती पर किया आक्रमण की घोषणा कर कौंध गर्जन से किया
बूदों की तीक्ष्ण बाणों से प्रहार मेघों ने किया
विनाशकारी प्रभन्जन वन पवन ने हमला किया (चंद, 2019, पृ. 34)

सन् 2016 में विनाशकारी चक्रवात 'विंस्टन' के प्रकोप ने फीजी में त्राहि मचा ही। चक्रवात 'विंस्टन' के कारण कई बस्तियाँ बिखर गईं, फसल बरबाद हो गए, पेड़-पौधें गिर गए, घर, स्कूल, इमारतों की छते उड़ गई और यहाँ तक की कुछ लोगों की मृत्यु भी गई थी। 'विंस्टन' के प्रकोप को कवयित्री सुएता चौधरी 'दर्द का आलाम' कविता की पंक्तियों में अभिव्यक्त करती हैं-

हवा का रुख कुछ यूँ आया हुई धड़कने तेज़
किया प्रहार 'विंस्टन' के प्रकोप ने एक दरिया बह गया नैनों से
छतों की पतंग बादलों में लहराई

मनुष्य ने सुन्दरता के कई प्रमाण प्रकृति से लिए हैं। प्रकृति मनुष्य को जीवन दान देती है, जीना सिखाती है और मनुष्य जब अकेला होता है तब उसकी संगी साथी बन जाती है। ऐसी ही भावनाएं कवयित्री सुएता चौधरी की कविता 'पर्वत' में प्रस्तुत हुई हैं। 'पर्वत' पाठकों को जीवन में अपने इरादों को मजबूत रखने और अकेले लड़ने की प्रेरणा देती है।

मुझमें भार उठाने की ताकत है जिंदा रहने की उम्मीद भी
ना मैं झुका अपने इरादों से विश्वास जगाया हर पल में
कब से खड़ा हूँ अकेला ... (चौधरी, 2019, पृ. 51)

उक्त कविता यह उद्देश्य देती है कि व्यक्ति को अकेले होने पर अपना आत्म विश्वास नहीं खोना चाहिए बल्कि उसे निडर होकर आगे बढ़ना है। ताकि एक दिन वह पर्वत के उस ऊँचे शिखर की तरह अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकें। प्रकृति ऐसी सचेतन, सशक्त धारा है जिससे मानव में चेतना और शक्ति आती है।

कवयित्री अमरजीत कौर फीजी के हिंदी साहित्य में एक सुप्रसिद्ध नाम हैं। उनकी काव्य रचनाओं में धरती और प्रकृति प्रायः सचेतन प्राणी की तरह प्रस्तुत होती हैं, जो मानव जीवन और सामाजिक घटनाओं के साथ गहरे संबंध में दिखाई देती हैं। उदाहरण के लिए उनकी कविता की यह पंक्तियाँ देखें- “मैं अभागिन ऐसी धरती जिसका उजड़ गया है रूप फूल, फल, बाग बगीचे पड़ गए फीके रंग रूप।” इन पंक्तियों में सूखे के कारण धरती विलाप कर रही है। वर्षा न होने के कारण उसकी गोद उजड़ गई है, छाती फट रही है और जीव जड़ित प्राणी घबड़ा रहे हैं। अमरजीत कौर की कविता में प्रकृति केवल दृश्य या पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि मानवीय संवेदनाओं का प्रतिबिंब है। इस प्रकार उनकी रचनाओं में मानवीय पीड़ा, संताप और चिंता की गूंज स्पष्ट रूप से प्रकट होती है।

मानव के अंतर्जगत और बहिर्जगत को आलोकित करने में प्रकृति का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रकृति के आलंबन रूप से तात्पर्य यह है कि प्रकृति का स्वतंत्र एवं निरपेक्ष चित्रण किया जाए। जिसके अंतर्गत प्रकृति के विविध सुन्दर दृश्यों के बिंब प्रस्तुत किए जाए जिसमें सरलता, सजीवता एवं मन को आकर्षित करने की क्षमता हो। कवयित्री अमरजीत कौर की ‘घटा’ कविता उदाहरण के लिए देखिए-

फुलवारी में फूल खिले हैं, तितलियाँ तुनक-तुनक इठलातीं।
पुष्पों के मुख चूम-चूम कर, प्रेम-आलिंगन की रास रचातीं।
(कौर, 2006, पृ. 26)

उक्त कविता में सुन्दर फूल, इठलाती तितलियाँ, आस-पास की हरियाली और खूबसूरती देखकर कवयित्री का हृदय अपने प्रेमी के मिलन के लिए व्याकुल है। प्रकृति के विविध सुन्दर दृश्यों के बिंब के कारण प्रेमी-प्रेमिका एक दूसरे के प्रति और भी आकर्षित हो जाते हैं। तथा कवि चंद्रिका प्रसाद श्रीवास्तव ‘भूली याद’ कविता में प्रकृति के आलंबन रूप को दर्शाते हैं- “ये सागर की चंचल लहरें/ ये पड़ों की झुरमुट छाँव/ बालू की यह रेत सुवहली/ प्रिय तुम्हारे कोमल पाँव।” यहा कवयित्री को लगता है कि सागर की लहरें, पड़ों की छाँव, बालू के रेत उसके लिए प्रणय के गीत गा रहे हैं और वह अपने प्रेमी से मिलने के लिए आतुर हो उठती है।

प्रकृति के प्रति एक कौतुक भरा असमंजस मानव के मन में सदियों से छिपा हुआ है। सृष्टि के रहस्य को जानने की आतुरता फीजी के कवियों को भी रोमांचित कर देती है। कवि मिश्र प्रकृति के प्रति अपनी जिज्ञासा इन पंक्तियों में व्यंजित करते हैं-

मैं जगती को जान नहीं पाता हूँ मैं समझ काल को जान नहीं पाता हूँ
किस तरह अखिल वसुधा को मैं पहचानूँ जब अपने को पहचान नहीं पाता हूँ।

इन पंक्तियों में कवि प्रकृति के परिवर्तित परिवेश और सृष्टि के गूढ़ रहस्य को समझने का प्रयास करता हुआ दिखाई देता है। वह केवल बाहरी जगत को नहीं, बल्कि स्वयं के अस्तित्व को पहचानने की जिज्ञासा से भी जुड़ा हुआ है। कवि यह संकेत देता है कि जब तक मनुष्य स्वयं को नहीं पहचानता, तब तक वह सृष्टि, समय और संपूर्ण धरती (अखिल वसुधा) के रहस्य को भी पूरी तरह नहीं समझ सकता। इस प्रकार यह कविता आत्मबोध, प्रकृति-बोध और जीवन-दर्शन तीनों को एक साथ जोड़ती है और मानव तथा प्रकृति के गहरे, दार्शनिक संबंध को उजागर करती है। 'जीवन-मार्ग' कविता में कवि मिश्र जी जीवन में किसी अज्ञात शक्ति को महसूस करते हैं-

हमारा निश्चत जीवन मार्ग भाग्य में अंकित है अज्ञात
खींचती हमको कोई शक्ति चल रहे हैं हम सब दिन रात (मिश्र, 1999, पृ. 4)

प्रकृति और मानव का अटूट संबंध है। मानव का जन्म से लेकर अंत एक प्रकृति से जुड़ाव रहा है। प्रकृति प्रदत साधन सामग्री से उसका विकास होता है तथा बचपन, यौवन और बुढ़ापा की श्रृंखलाबद्ध अवस्थाओं में प्रकृति ही उसे सहयोग देती है और अंत में भी प्रकृति ही उसे अपने गोद में सुला लेती है।

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि फीजी की हिंदी कविता में प्राकृतिक चित्रण केवल सौंदर्यात्मक नहीं, बल्कि गहन संवेदनात्मक और वैचारिक है। कवियों ने प्रकृति को निष्क्रिय पृष्ठभूमि के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय अनुभव, स्मृति और संघर्ष की सहचर सत्ता के रूप में प्रस्तुत किया है। अतः यह कहा जा सकता है कि फीजी का हिंदी काव्य प्रवासी भारतीयों के जीवन-संघर्ष, सामाजिक यथार्थ और सांस्कृतिक स्मृति का प्रतिनिधित्व करते हुए एक सशक्त पर्यावरणीय साहित्यिक विमर्श का निर्माण करता है, जिसमें मनुष्य, प्रकृति और संस्कृति का त्रिकोणीय संबंध स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ :

[1] कंवल53.पृष्ठ सं .डायमंड पब्लिकेशन्स .दर्द अपने अपने .(2001) .जोगिन्द्र सिंह ,

[1] शर्मा, डॉ जोगिन्द्र .संपा) फीजी का हिंदी काव्य साहित्य .(2004) .नेतराम .सिंह कंवलभारतीय .(55.पृष्ठ .सांस्कृतिक संबंध परिषद

[1] वही42 पृष्ठ ,

[1]चंद, नरेशविद्या .(सुभाषिनी कुमार एवं मुकेश मिश्र .संपा) फीजी हिंदी काव्य साहित्य .(2019) . 34 पृष्ठ .प्रकाशन

[1] चौधरी, सुएतायह भी मेरे देश की माटी .(2019) ., वह भी मेरे देश की माटी पृष्ठ .निकष प्रकाशन .51

[1] वही53 पृष्ठ ,

[1] कौर, अमरजीत26 पृष्ठ .फीजी ,सिंह प्रकाशन .स्वर्णिम साँझ .(2006) .

[1] मिश्र, कमला प्रसाद .डॉ .संपा) कमला प्रसाद मिश्र का काव्य : फीजी के राष्ट्रीय कवि .(1999) . द .निकष प्रकाशन .(विवेकानन्द शर्माि्ल्ली4 पृष्ठ .

****